उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियाँ एवं प्रतिक्रिया: लखनऊ जिले के युवाओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन

(Challenges and Response of First Generation Students in Higher Education: A Sociological Study of Youth in Lucknow District)

शोध-सारांश

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ से
समाजशास्त्र विषय में पी-एच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत

डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी

शोधार्थी

सुनीता भारती

नामांकन सं0 116/13

शोध निर्देशक

डॉ ब्रजेश कुमार

सहायक आचार्य
समाजशास्त्र विभाग

BABASAHEB
BHIMRAO
AMBEDKAR
UNIVERSITY

LUCKNOW

प्रज्ञा शील करुणा

ESTABLISHED 1996

समाजशास्त्र विभाग
अम्बेडकर अध्ययन विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ (उ०प्र०)

2020

शोध सारांश

प्रस्तावना

भारत में जो उच्च शिक्षा में अभूतपूर्व विकास हुआ है वो माता–पिता की अपने बच्चों को शिक्षित करने की प्रेरणा और सरकार की नीतियों के कारण सम्भव हो पाया है। किन्तु भारत में उच्च शिक्षा का विस्तार मात्रात्मक रहा है न कि गुणात्मक। सरकार उच्च शिक्षा में जनसंख्या की विषमता को पहचानने में विफल रही है जो कि भारत की उच्च शिक्षा में गुणात्मक सुधार करने में बाधक सिद्ध होती है।

उच्च शिक्षा के विस्तार में महिलाओं, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की भूमिका अधिक रही है, जिसमें अधिकतर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी हैं। कुछ प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी सामान्य वर्ग से भी आते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि पिछले ढाई दशकों में जो उच्च शिक्षा में जबरदस्त वृद्धि हुई है वह उच्च शिक्षा में समानता लाने और समावेशीय विकास करने में विफल रही है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

भारतीय परिपेक्ष्य में उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों पर बहुत कम अध्ययन किये गये हैं। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करनें में अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। अभिभावकों का उच्च शिक्षा प्राप्त न कर पाना प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की आर्थिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि को प्रभावित करता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उनके अभिभावकों के से विश्वविद्यालय के चुनाव के लिए उचित मार्गदर्शन नहीं मिल पाता है। अभिभावकों की प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का स्कूल से विश्वविद्यालय में स्थानान्तरण करने में महत्वपूर्ण भागीदारी होती है। वर्तमान समय में उच्च शिक्षा के प्रसार को देखते हुए निम्न स्तर से आने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी विश्वविद्यालय में प्रवेश ले रहे हैं किन्तु उन्हें प्रवेश प्रक्रिया के समय भी उनकी स्थिति को देखते हुए उन्हें प्रवेश लेने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उन्हें अध्ययन कक्ष में पाठ्यक्रम एवं

भाषा से सम्बन्धित समस्याओं का सामना करना पड़ता है उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी सामाजिक अन्तः क्रिया करने में संकोच करते हैं। जब उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का स्कूल से विश्वविद्यालय में प्रवेश होता है तो उस प्रक्रिया के दौरान भी उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को परिसर में तथा पुस्तकालय में समायोजन करने में परेशानियों को सहन करना पड़ता है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का अर्थ

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को समझने के लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की सार्वभौमिक रूप से कोई स्वीकृत परिभाषा नहीं है। एक परिभाषा में कहा गया है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी ऐसे विद्यार्थी हैं जिनके माता–पिता ने उच्च शिक्षा में कभी दाखिला नहीं लिया (नूनैज एण्ड कोकारो–अलमिन, 1998)। वैकल्पिक रूप से, चॉय (2001) प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को परिभाषित करता है जिनके परिवार में किसी ने कॉलेज या विश्वविद्यालय का अनुभव नहीं किया।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को ऐसे विद्यार्थी के रूप में वर्णित किया जा सकता है, जिनके माता–पिता के पास न तो स्नातक की डिग्री होती है और न ही कॉलेज का अनुभव (डार्लिंग और स्मिथ 2007)। अध्ययन के उद्देश्य के लिए शोधार्थी ने प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को इस प्रकार से परिभाषित किया है जो कि परिवार का पहला सदस्य है और उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा है। इसका मतलब है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी के अभिभावकों में से किसी ने भी उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं की है।

सैद्धांतिक रूपरेखा

उच्च शिक्षा में प्रवेश सभी के लिए खुले हैं जाति, वर्ग और लिंग उच्च शिक्षा में प्रवेश के लिए कोई मायने नहीं रखते हैं किन्तु प्रवेश मात्र से ही उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियाँ दूर नहीं होती। प्रकार्यात्मक सिद्धांत के दावे के विपरीत उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा प्रेषित मानदंड और मूल्य अभिजात वर्ग के होते हैं न कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के। अतः प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों को समझने में प्रकार्यात्मक सिद्धांत की अपनी सीमाएँ हैं।

जबकि मार्क्सवादी सिद्धांत का तर्क है कि उच्च शिक्षा द्वारा बनाए गए मूल्य, मानदंड और व्यवहार केवल विशेषाधिकार प्राप्त विद्यार्थियों के होते हैं। इसलिए प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी उच्च शिक्षण संस्थानों में एक वंचित समूह के सदस्य बनकर रह जाते हैं। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। कई और समाजशास्त्री भी यह मानते हैं कि शिक्षा प्रणाली योग्यता पर आधारित नहीं होती है। इसमें सामाजिक वर्ग और सांस्कृतिक पूंजी की भी अहम भूमिका होती है। इसलिए मार्क्सवादी सिद्धांत के साथ–साथ माइकल हेचेट की कम्यूनिकेशन थ्योरी ऑफ आइडेन्टिटी (सी0टी0आइ) बुर्दियों की हैबिट्स, एवं सांस्कृतिक पूंजी तथा गिडेन्स की स्वयं की संवेदनशीलता के सिद्धांत के आधार पर हम प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियाँ एवं उनकी प्रतिक्रियाओं का पूर्ण वर्णन कर सकते हैं।

उच्च शिक्षा में अपने आप को स्थापित करने में पहचान की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। CTI के अनुसार पहचान के चार फ्रेम होते हैं। पहचान का पहला फ्रेम व्यक्तिगत फ्रेम होता है। यहाँ आत्म–अनुभूति, आत्म–अवधारणा एवं सलामती का एहसास उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों की पहचान की नींव डालती है। दूसरे फ्रेम में विद्यार्थी संचार के माध्यम से अपनी पहचान का प्रदर्शन करते हैं और दूसरों को प्रभावित करते हैं। तीसरे फ्रेम में दूसरों के साथ संबंधों के माध्यम से पहचान को उभारा जाता है जिससे पहचान निर्मित होती है। चौथा फ्रेम एक बड़े समूह से संबंधित होता है। समान पहचान एक बड़े सामूहिक समूह को जन्म देती है और बदले में विद्यार्थियों को व्यक्तिगत पहचान देती है। इस अध्ययन में यह तर्क दिया जा सकता है कि प्रबल सामूहिक पहचान उच्च शिक्षा प्रणाली में सामाजिक और शैक्षिक वातावरण पर हावी होता है।

CTI को बुर्दियों की 'हैबिट्स', 'सांस्कृतिक पूंजी' और 'वर्ग' की अवधारणा द्वारा पूरक किया जा सकता है। बुर्दियों (1977) के अनुसार धारणाओं, पसंद और प्रस्तावों की प्रणाली सामाजिक एवं किसी की सांस्कृतिक विशिष्टता को प्रकट करती है। परिवार की परवरिश, मित्र, पड़ोस का परिवेश एवं समाजीकरण विद्यार्थियों के हैबिट्स का निर्माण करता है, जो बदले में उनकी सांस्कृतिक पूंजी के अधिग्रहण में मदद करता है। इसमें कोई संदेह नहीं है

कि निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति के विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पूंजी उच्च शिक्षा में उनके कोई काम नहीं आती।

अनिश्चितता के इस युग ने युवाओं को ''स्वयं की संवेदनशीलता'' (Reflexity of the self) (गिडेन्स, 1991) के माध्यम से अपना रास्ता खोजने के लिए छोड़ दिया है। युवा पूरी तरह संरचनात्मक बलों द्वारा निर्धारित नहीं होते, बल्की वे अपने क्रियाओं के प्रति संवेदनशील भी होते हैं। संरचनात्मक बलों को समझने और उसे संशोधित करने की कोशिश भी करते हैं जिसे व्यक्तिगत एजेन्सी कहते हैं। वर्तमान अध्ययन CTI , बुर्दियों के सिद्धान्त और व्यक्तिगत एंजेसी द्वारा प्रदान की गई सैद्धान्तिक रूपरेखा में स्थित है, जो उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों और प्रतिक्रिया का पूर्ण वर्णन करता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि को चिन्हित करना।
2. उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अध्ययन कक्ष एवं अध्ययन कक्ष के बाहर परिसर में चुनौतियों एवं प्रतिक्रियाओं को जानना।
3. उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के स्कूल से विश्वविद्यालय के स्थानान्तरण के दौरान अभिभावकों की भागीदारी का विश्लेषण करना।
4. उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के सामने आने वाली चुनौतियों का सामना करने के अनुभवों को इंगित करना।
5. उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की समस्याओं को दूर करने हेतु सुझाव देना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी निम्न आर्थिक पृष्ठभूमि से होते हैं।
2. उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अध्ययन कक्ष में अन्तःक्रिया करने में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है।

3. उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अध्ययन कक्ष के बाहर परिसर में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।
4. प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के स्कूल से विश्वविद्यालय के स्थानान्तरण के दौरान अभिभावकों की भागीदारी कम या ना के बराबर होती है।
5. प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्रणाली में अलगाव महसूस करते हैं।

शोध पद्धति

अध्ययन की प्रकृति और उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए वर्णानात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों विधियों का उपयोग किया गया है इसलिए यह अध्ययन मिश्रित विधि पर आधारित है– इसे त्रिभुज डिजाइन भी कहा जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों विधियों को समान वरीयता प्रदान की गयी है। गुणात्मक और मात्रात्मक तथ्य दोनों एक ही समय में एकत्र किये गये हैं और इनके तथ्यों के विश्लेषण को दो चरणों में बाँटा गया है।

पहले चरण में मात्रात्मक और गुणात्मक तथ्यों का अलग–अलग विश्लेषण किया गया है। दूसरे चरण में गुणात्मक और मात्रात्मक तथ्यों के विश्लेषण की तुलना की गयी है।

अध्ययन का निदर्शन

संभावना (probability) और उद्देश्यपूर्ण (purposive) तकनीक दोनों का उपयोग निदर्शन के उद्देश्य से किया गया है, जो परिकल्पनाओं को संबोधित करता है। इस अध्ययन के उद्देश्य के लिए निदर्शन के दो सेट का उपयोग किया गया है– एक मात्रात्मक विश्लेषण के लिए और दूसरा गुणात्मक विश्लेषण के लिए। हालांकि गुणात्मक विश्लेषण के लिए निदर्शन के रूप में 30 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का एक–उप निदर्शन है जो मात्रात्मक विश्लेषण के लिए चुने गए प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के निदर्शन में से चुना गया है।

तथ्य संग्रह तकनीक

साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों एवं प्रतिक्रियों के बारे में तथ्य एकत्र करने के लिए किया गया है।

पायलट परीक्षण साक्षात्कार अनुसूची को मान्य करने और साक्षात्कार गाइड में आवश्यक संशोधन को शामिल करने के लिए किया गया है। तथ्य एकत्र करने के लिए वास्तविक क्षेत्र का काम फरवरी 2017 से अगस्त 2017 के दौरान किया गया है।

गुणात्मक तथ्य 30 उत्तरदाताओं से गहन साक्षात्कार के माध्यम से एकत्र किये गये हैं।

गुणात्मक तथ्य एकत्र करने के लिए गहन साक्षात्कार फरवरी 2017 से अगस्त 2017 के दौरान आयोजित किया गया। प्रत्येक साक्षात्कार लगभग 20 से 30 मिनट तक चला। साक्षात्कार की शुरूआत खुले प्रश्नों के साथ हुई जो सीधे शोध के विषय से निकलते हैं।

अध्ययन में प्रयुक्त होने वाले चर

शोध में कई सामाजिक और आर्थिक चर शामिल हैं जो प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों एवं प्रतिक्रिया को निर्धारित करते हैं। प्रमुख चर आयु, लिंग, जाति समूह, धर्म, पारिवारिक आय, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, पिता का शैक्षिक स्तर, माता–पिता की भागीदारी आदि हैं।

उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों एवं प्रतिक्रिया का आकलन करने के लिए साथियों, परिचितों के समर्थन के साथ माता–पिता की भागीदारी का उपयोग किया गया है।

प्रमुख चर एवं तथ्यों का विश्लेषण

सांख्यिकीय विश्लेषण करने के लिए वर्णानात्मक आँकड़ें और रेखाचित्र का प्रयोग किया गया है। गुणात्मक तथ्यों का विश्लेषण करना एक जटिल कार्य है तथ्यों के विश्लेषण में अनुसंधान के विषय के संबंध में चुनौतियों और प्रत्येक उत्तरदाता की प्रतिक्रिया का एक विस्तृत विवरण विकसित करना शामिल है। गुणात्मक तथ्यों के संग्रह और विश्लेषण एक साथ आगे बढ़ते हैं। उत्तरदाताओं द्वारा उपलब्ध कराए गए कच्चे आँकड़ों का विश्लेषण इसके संदर्भ में किया जाता है ताकि चुनौतियों का विवरण और विषय विशिष्ट गतिविधियों और मामलें में शामिल स्थितियों से संबंधित हों।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियाँ

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की अध्ययन कक्ष में होने वाली चर्चा में भागीदारी कम होती है। कम भागीदारी के कारण प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अध्ययन कक्ष में होने वाली चर्चा में आसानी से भाग नहीं ले पाते हैं। और जो विद्यार्थी कुछ हद तक भागदारी करते हैं वे शीघ्र अनुभव करने लग जाते हैं कि उनके ज्ञान में कुछ कमी है। इन प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में से भी मुठठी भर ऐसे विद्यार्थी है जिनकी अध्ययन कक्ष में होने वाली चर्चा में पूर्ण रूप से भागीदारी रहती है।

शिक्षक और विद्यार्थी की अन्तःक्रिया में विभिन्न प्रकार के संचार और संपर्क शामिल है, जिसमें अध्ययन कक्ष के बाहर अनौपचारिक और औपचारिक बैठके शामिल हैं, जैसे पुस्तकालय या कार्यालय समय में बातचीत, साथ ही पाठ्यक्रम से संबंधित विषयों, कैरियर योजनाओं के बारे में चर्चा, शैक्षिक मुद्दे या व्यक्तिगत विषय आादि। शिक्षक के साथ पाठ्यक्रम से संबंधित सामाग्री के बारे में चर्चा यह दर्शाती है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में अवधारणा की समझ का आभाव होता है।

प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययन कक्ष में होने वाली समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अध्ययन कक्ष में अंग्रेजी माध्यम की भी समस्या होती है। अंग्रेजी माध्यम का उचित ज्ञान न होने के कारण वे अपने पाठय्क्रम को समझने में स्वयं

को सक्षम नहीं पाते तथा शिक्षक द्वारा पढ़ाये गए पाठय्क्रम को समझने में एवं अध्ययन कक्ष में समायोजन स्थापित करने में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को समय लगता है।

शोध अध्ययन में यह भी पाया गया कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का गृहकार्य अन्य विद्यार्थियों की तुलना में पिछड़ा होता है और पारिवारिक वातावरण उपयुक्त न होने के कारण विद्यार्थी गृहकार्य को उचित रूप में पूर्ण नहीं कर पाते हैं। गृहकार्य में पिछड़ने की वजह से प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की अध्ययन कक्ष में होने वाली गतिविधियों में भागीदारी कम हो जाती है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अध्ययन कक्ष में होने वाली गतिविधियों को जानने और समझने में भी समय लगता है, इसलिए शिक्षकों को प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों पर अधिक ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता होती है, जबकि ऐसा नहीं होता है।

जैसा कि उपरोक्त विवरण में बताया गया कि शिक्षक और विद्यार्थियों के मध्य औपचारिक और अनौपचारिक रूप से अन्तःक्रिया होती है किन्तु प्रस्तुत शोध में पाया गया कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी शिक्षकों से बातचीत करने में संकोच महसूस करते हैं। इस प्रकार से सांस्कृतिक और सामाजिक पूंजी वाले विद्यार्थी कुछ पाठ्यक्रमों को समझ पाते हैं, जबकि उसी पूंजी के बिना प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी स्वयं को अलग–थलग महसूस करते हैं, या यह अनुभव करते हैं कि वे उच्च शिक्षा में समय और धन बर्बाद कर रहे हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की जड़ता उन्हें उच्च शिक्षा के वातावरण को आत्मसात करने में बाधक होती है। यह जड़ता अध्ययन कक्ष के अन्दर एवं बाहर परिसर में अपने आपको ढालने में विफल बनाती है। किन्तु इसके लिए उन्हें दोषी मानना ठीक नहीं है क्योंकि उन्हें उच्च शिक्षा प्रणाली से कोई समर्थन नहीं प्राप्त होता है। उच्च शिक्षा प्रणाली केवल मध्ययम एवं उच्च वर्ग के विद्यार्थियों के समर्थन में रहता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी न तो अपनी पहचान का प्रदर्शन कर पाते हैं न ही अपने आपको प्रभावी समूह का हिस्सा बना पाते हैं। फलस्वरूप प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी प्रभावी समूह से अलगाव महसूस करते हैं और स्वयं को उच्च शिक्षा के परिवेश में समायोजित करने में विफल रहते हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अंक कम होते हैं और उनके द्वारा अधिक बार पाठ्यक्रमों को छोड़ने की संभावना रहती है। आर्थिक तंगी प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। कुछ प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी ऐसे होते हैं जो स्वयं की इच्छा से विश्वविद्यालय में प्रवेश नहीं लेते हैं ऐसे विद्यार्थी केवल विश्वविद्यालय शिक्षा को पूर्ण करना चाहते हैं परिवार के लिए वे अधिकांशतः कला संकाय और ललित कला जैसे पाठ्यक्रमों का चयन करते हैं। किन्तु कुछ ऐसे भी प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी होते हैं जो अपने लिए एवं अपने परिवार के लिए कुछ करना चाहते हैं और आर्थिक सहायता करने के लिए, और परिवार को सम्मान दिलाने के लिए भी उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं। इसके लिए वे ऐसे पाठ्यक्रमों का चयन करते जिनसे उन्हें उच्च भुगतान वाली नौकरियाँ प्राप्त करने की संभावना होती है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को शिक्षकों के बोलने के तरीके एवं लहजे को समझने में भी कठिनाई होती है जिससे उन्हें शिक्षकों के द्वारा पढ़ाये गये विषय को समझने में दिक्कत होती है। गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की तुलना में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण उन्हें पाठ्यक्रम से सम्बन्धित पुस्तकों की व्यवस्था करना कठिन होता है।

कभी–कभी विश्वविद्यालय की जरूरतों के हिसाब से व्यवहार न होने के कारण भी प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को दूसरों से बातचीत करने में असहजता महसूस होती है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अध्ययन कक्ष में शिक्षकों के द्वारा पढ़ाये जाने वाले विषयों के समझ में न आने के कारण भी चिंतित रहते हैं उन्हें यह चिन्ता सताती है कि वे अन्य विद्यार्थियों के समान अच्छा प्रदर्शन नही कर पायेंगें और अन्ततः परीक्षा में अन्य विद्यार्थियों की तुलना में अंक भी कम ही अर्जित कर पायेंगें।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावकों के पास विश्वविद्यालय के वातावरण और वहां की संस्कृति के विषय में विशेष ज्ञान न होने के कारण वे अपने बच्चों को वहां के वातावरण और वहां की संस्कृति से परिचित नहीं करा पाते हैं जो प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों का मुख्य कारण होता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी गैर–प्रथम

पीढ़ी के विद्यार्थियों के समान अध्ययन कक्ष में अपने विचारों को प्रदर्शित करने में स्वयं को पिछड़ा हुआ महसूस करते हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी जातिगत भेदभाव का भी अनुभव करते हैं। जैसे उच्च जाति के विद्यार्थियों को प्रत्येक कार्य के लिए वरियता देना, सुन्दरता के आधार पर भी भेदभाव होता है यदि विद्यार्थी सुन्दर होता है तो उसे सांस्कृतिक गतिविधियों में भागीदारी करने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है। जिसके कारण जो प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी होते हैं वे हतोत्साहित हो जाते हैं। और उनके आगे बढ़कर कुछ करने का जो मनोबल स्तर होता है वो और भी नीचे गिर जाता है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए अध्ययन कक्ष में मित्र बनाना थोड़ा मुश्किल होता है क्योंकि उनका संकोची व्यवहार होने के कारण वे शीघ्र किसी से बातचीत नहीं कर पाते हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावकों की मासिक आय कम होने के कारण वे अपने बच्चों को आधुनिक समय में विश्वविद्यालय में प्रयोग किये जाने वाले उपकरण उपलब्ध कराने में स्वयं को असमर्थ महसूस करते हैं आधुनिक उपकरण प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के पास उपलब्ध न होने से उन्हें काफी कठिनाई होती है। वे अपने अध्ययन कक्ष में दिये जाने वाले गृहकार्य पूर्ण करने में विफल रहते हैं। जिसके कारण वे अन्य विद्यार्थियों की तुलना में पिछड़ जाते हैं। और अपनी योग्यता का प्रदर्शन करने में सफल नहीं हो पाते हैं।

निम्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा की संस्कृति को समझने में कठिनाई होती है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा दोस्त बनाने और बनाए रखने में सामाजिक वर्ग का प्रभाव विद्यार्थियों की क्षमता पर पड़ता है। और जो विद्यार्थी अधिक सम्पन्न वर्गों से आते हैं, वे अधिक सहज होते हैं और उनके लिए निम्न वर्गीय साथियों की तुलना में नए दोस्त बनाना आसान होता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अपने परिवारों से दूर विश्वविद्यालय और घर की दुनिया के बीच संघर्ष करना पड़ता है।

कई प्रतिभागियों ने इस भावना को ''उत्तरजीवी के अपराधबोध'' (सरवाइवर गिल्ट) के रूप में परिभाषित किया है और बहुत से विद्यार्थी इस बात से सहमत हुए कि उनकी सफलता भावभीनी (बिटरस्वीट) थी क्योंकि इससे उन्हें अपने समुदायों से दूर रहना पड़ा।

वर्तमान शोध बताते हैं कि शैक्षणिक तैयारी, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, विश्वविद्यालय की संस्कृति के झटके का अनुभव और विश्वविद्यालय की प्रक्रिया में परिवार, अभिभावकों की भागीदारी सहित कई क्षेत्रों में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने साथियों की तुलना में अलग हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अपने आपको विश्वविद्यालय में स्थापित करना और भी मुश्किल हो जाता है क्योंकि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में स्थानान्तरण करते हैं, जो गंभीर संघर्ष का कारण बनता है और उनके परिसर जीवन को प्रभावित करता है।

अभिभावकों की भागीदारी

अभिभावक और विद्यार्थी में बातचीत एक गैर शैक्षणिक कारक है जो विद्यार्थियों की सफलता के लिए विशेष रूप से मूल्यवान है। हाई स्कूल से विश्वविद्यालय में स्थानान्तरण कई विद्यार्थियों के लिए तनावपूर्ण हो सकता। इस स्थानान्तरण के दौरान अभिभावकों की सहायता महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि अभिभावक अपने बच्चों को कौशल और नीतियों को विकसित करने में मदद करने के लिए सलाह, निर्देश और भावनात्मक समर्थन प्रदान करते हैं।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि अभिभावकों के हौसले और आकांक्षाएँ प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में उच्च शिक्षा में प्रवेश प्राप्त करने की ऊर्जा देते हैं। किन्तु उच्च शिक्षा के भीतर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियाँ भिन्न होती हैं। वे मानते हैं कि अभिभावकों की भागीदारी सीमित है। अभिभावकों की भागीदारी उत्साह बनाए रखने तक ही होती है वे चुनौतियों को सुलझाने की क्षमता नहीं रखते। अभिभावकों को बस यही लगता है कि सबसे बड़ी दिक्कत आर्थिक तंगी होती है जिसके लिए वे हर सम्भव प्रयास करते हैं।

माता–पिता की आकांक्षाएँ बहुत होती हैं किन्तु उनकी मार्गदर्शन करने की क्षमता सीमित होती है। सांस्कृतिक पूंजी के आभाव एवं गरीबी के कारण अभिभावक अपने बच्चों की समस्याओं का समाधान नहीं कर पाते हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी एक ऐसी दुनिया को खोजने के लिए परिसर में पहुँचते हैं जो अपने मूल पारिवारिक मूल्यों के साथ संघर्ष करते हैं क्योंकि उनकी विश्वविद्यालय संस्कृति और पारिवारिक संस्कृति के बीच संतुलन नही होता है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएँ

तथ्यों के संग्रह एवं मूल्यांकन से यह पता चलता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाओं को अपनाते हैं। किन्तु इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि अधिकतर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी या तो ड्रॉप–आउट हो जाते हैं या तो वे स्वयं को मौजूदा शैक्षिक वातावरण में आत्मसर्म्पण करते हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी जो अपनी शिक्षा को जारी रखने में कठिनाई का सामना करते हैं वे अपने संकोची स्वभाव के कारण दूसरों से अन्तःक्रिया नहीं करते हैं किन्तु उन्हें शंका रहती है कि गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी उनसे अन्तःक्रिया करने में इच्छुक रहते हैं। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अपनी क्षमता पर भी शंका होती है कि वे अपनी शिक्षा को सुचारू रूप से जारी रख भी पायेंगें या नहीं।

सभी प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी एक ही तरह की प्रतिक्रियाएँ नहीं देते हैं। उनमें से कुछ अपनी ऐजेन्सी का उपयोग करते हैं और अपने प्रदर्शन में सुधार कर पाते हैं। इनमें से कुछ विद्यार्थी तो अपने आपको कुलीन प्रभावी वर्ग समूह के साथ समायोजित भी कर लेते हैं। किन्तु इस तरह के प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी नगण्य हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया के प्रकार

इस अध्ययन के आधार पर हमें मुख्यतः तीन प्रकार के प्रतिक्रिया मिलती है और इसके आधार पर हम प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को तीन श्रेणी में बाँट सकते हैं।

ये तीन प्रकार के व्यक्तित्व हैं घुटने टेकने वाले व्यक्तित्व, जुझारू व्यक्तित्व, मिलनसार व्यक्तित्व।

घुटने टेकने वाले व्यक्तित्वः घुटने टेकने वाले व्यक्तित्व से सम्बन्धित वे प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी हैं जो उच्च शिक्षा प्राप्त करने में बहुत ही अधिक कठिनाई का अनुभव करते हैं और वे निराश होकर अपनी शिक्षा को बीच में ही छोड़ देते हैं यदि वे उच्च शिक्षा में बने भी रहते हैं तो केवल डिग्री प्राप्त करने के लिए बने रहते हैं। और ऐसे विद्यार्थियों की संख्या सबसे अधिक है।

जुझारू व्यक्तित्वः ये प्रथम पीढ़ी के वे विद्यार्थी हैं जो विश्वविद्यालय परिसर में अभिजात वर्ग की संस्कृति का विरोध करते हैं और हाशिएकृत विद्यार्थियों के लिए उचित वातावरण तैयार करने की वकालत करते हैं।

ये भाषायी कठिनाई के कारण प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की तुलना में धीरे–धीरे समस्याओं को समझ पाते हैं। लेकिन वे आमतौर पर एक या दो सेमेस्टर खत्म होने तक अपनी समस्याओं को भली–भाँति समझ जाते हैं और उसे दूर करने का प्रयत्न करते हैं। वे मुद्दे पर बहस छेड़ देते हैं। वे स्वयं के लिए एवं अपने जैसे प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए परिसर में सुरक्षित जगह बनाने का प्रयास करते हैं। इनमें से कुछ विद्रोही हो जाते हैं और उच्च शिक्षा में प्रभावी समूह के वातावरण के विरोध के लिए प्रति संस्कृति का निर्माण करते हैं। यह प्रति संस्कृति प्रभावी संस्कृति के मानदण्डों और मूल्यों को चुनौती देती है।

मिलनसार व्यक्तित्वः ये ऐसे प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी हैं जो गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अपना सन्दर्भ समूह मानते हैं। और इसी हिसाब से वे अपने रीति–रिवाजों, संस्कृति और व्यवहार को बदलने का निरन्तर प्रयास करते रहते हैं। वे पढ़ाई के अलावा कपड़े पहनने की आदतें एवं बोलने के लहजे में भी निरन्तर बदलाव करते रहते हैं। इस प्रकार वे लगातार वि–समाजीकरण एवं पुर्न समाजीकरण द्वारा अपनी सांस्कृतिक पूंजी की जकड़न से बाहर निकल कर अपने आपको उच्च शिक्षा में स्थापित करने में सफल रहते हैं।

इनकी अन्य महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैं यह तुरन्त एक नये माहौल को समझ लेते हैं और सुचारू रूप से अपना अध्ययन करते हैं। ये प्रभावी विद्यार्थियों के साथ अच्छे सहयोगी सम्बन्धों की आवश्यकता को समझते हैं साथ ही सभी के साथ सहानुभूति दर्शाते हैं। ये तुरन्त भाप जाते हैं कि यदि वे ऐसा नहीं करेंगें तो उन्हें उच्च शिक्षा में अलगाव का सामना करना पड़ेगा। वे अपने आप को शांत एवं रचित रखते हैं और साथ ही आत्मविश्वास से भरे होते हैं। वे अच्छे स्त्रोता भी होते हैं, उत्सुक रहते हैं और अपनी गलतियों से सीखते हैं। ये गुण उन्हें उच्च शिक्षा के नए वातावरण में लचीला बनाते हैं। यही कारण है कि वे आसानी से नाराजगी महसूस नहीं करते, नाजुक भावना से प्रभावित नहीं होते और नयी चीजों को सीखने की उत्सुकता बनाये रखते हैं तथा कठिन परिश्रम करते हैं। किन्तु मुठठी भर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का इस प्रकार का व्यक्तित्व होता है।

प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर परिकल्पनाओं के परीक्षण को संक्षेप में इस प्रकार दर्शाया जा सकता हैः

परिकल्पना 1: उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी निम्न आर्थिक पृष्ठभूमि से होते है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी कम आय वाले परिवारों से होते हैं, और वे विश्वविद्यालय का खर्च उठाने के लिए संघर्ष करते हैं। अपनी गैर–प्रथम पीढ़ी के साथियों के विपरीत, उन्हें विश्वविद्यालय के खर्चों का बोझ खुद ही संभालना पड़ता है। अधिकांश प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए इसका मतलब है कि उन्हें शिक्षा प्राप्त करने के समय में काम करना पड़ता है।

अध्ययन के तथ्यों से यह पता चलता है कि उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी निम्न आर्थिक पृष्ठभूमि से आते हैं। इस अध्ययन के 400 उत्तरदाओं का माध्य मासिक आय 16445.00 रूपये है और इसका मानक विचलन 5754.54 रूपये है। जिनमें न्यूनतम मासिक आय 6000 रूपये है और अधिकतक मासिक आय 32000 रूपये है। इन तथ्यों से प्रथम परिकल्पना सत्य साबित होती है।

परिकल्पना 2: उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अध्ययन कक्ष में अन्तःक्रिया करने में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अध्ययन कक्ष में अपने शिक्षकों एवं अपने सहपाठियों से अन्तःक्रिया करने में कठिनाई का अनुभव करना पड़ता है। प्रस्तुत अध्ययन से ज्ञात होता है कि जिन प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की अध्ययन कक्ष में होने वाली चर्चा में भागीदारी नहीं होती है उन विद्यार्थियों का प्रतिशत सबसे अधिक है।

अध्ययन के परिणाम से पता चलता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अन्य विद्यार्थियों के साथ अन्तःक्रिया करने में अधिक संकोच करते हैं और असहजता का भी अनुभव करते हैं। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी दूसरों से बातचीत करने में इसलिए भी असहजता का अनुभव करते हैं क्योंकि निम्न स्तर से आने के कारण उन्हें सभी प्रकार की जानकारी नहीं होती है और अगर दूसरों से वे पूछते हैं तो उन्हें लगता है कि कहीं वे उनका मजाक न उड़ा दें कि आज के समय में भी इसे इस बात की जानकारी नहीं है। कभी–कभी विश्वविद्यालय की जरूरतों के हिसाब से व्यवहार न होने के कारण भी प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को दूसरों से बातचीत करने में असहजता महसूस होती हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को शिक्षकों के बोलने के तरीके/लहजा और उनकी भाषा को समझने में भी कठिनाई होती है। अध्ययन के तथ्य यह भी दर्शाते हैं कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को शिक्षकों से स्पष्टीकरण करने में भी असहजता का अनुभव करना पड़ता हैं। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में संकोची प्रवृत्ति होने के कारण उन्हें मित्र बनाने में भी कठिनाई होती है क्योंकि वे दूसरों से अन्तःक्रिया करने में असहजता महसूस करते हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की कई प्रकार की चुनौतियों के आधार पर हमारी दूसरी परिकल्पना भी पूर्ण रूप से सत्य साबित होती है।

परिकल्पना 3: उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अध्ययन कक्ष के बाहर परिसर में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

अध्ययन के परिणाम यह बताते हैं कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए विश्वविद्यालय परिसर का वातावरण बिल्कुल नया होने के कारण वे स्वयं को समायोजित करने में असुविधा का अनुभव करते हैं और स्वयं को अनुपयुक्त (मिसफिट) पाते हैं। उन्हें यह लगता है कि यह जगह उन जैसे विद्यार्थियों के लिए नहीं है। अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी उच्च शिक्षा में प्रवेश लेने के पश्चात अफसोस महसूस करते हैं।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए कॉलेज के अनुभव अन्य विद्यार्थियों की तुलना में भिन्न होते हैं। जब वे कॉलेज में प्रवेश करते हैं उस दौरान वे सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के अनुभव को महसूस करते हैं। सकारात्मक अनुभवों मे वे महसूस करते हैं कि उच्च शिक्षा प्राप्त करने से वे अपने परिवार की आर्थिक सहायता में योगदान देने में सक्षम हो पायेंगें। उन विद्यार्थियों में सोचने और समझने की क्षमता का विकास होता है और उनका नये मित्र बनाने का अनुभव भी सकारात्मक होता है।

वास्तव में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा नकारात्मक अनुभव अधिक महसूस किये जाते हैं शिक्षकों के द्वारा विद्यार्थियों के प्रति जातिगत भेदभाव, हिन्दी या अंग्रेजी माध्यम के आधार पर विद्यार्थियों के साथ भेदभाव, अध्ययन कक्ष में उच्च जाति के विद्यार्थियों को वरियता प्रदान करने के आधार पर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों ने नकारात्मक भाव का अनुभव किया। वे विश्वविद्यालय के वातावरण से परिचित नहीं होते हैं क्योंकि प्रथम पीढ़ी के अभिभावकों के पास कॉलेज का कोई अनुभव नहीं होता है जिसके कारण विश्वविद्यालय के वातावरण के विषय में कोई पूर्व जानकारी नहीं होती है।

इस प्रकार से अध्ययन की तीसरी परिकल्पना भी पूर्ण रूप से सत्य साबित होती है।

परिकल्पना 4: प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के स्कूल से विश्वविद्यालय के स्थानान्तरण के दौरान अभिभावकों की भागीदारी कम या ना के बराबर होती है।

प्रस्तुत अध्ययन के तथ्य यह दर्शाते हैं कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी बहुत हद तक अपने अभिभावकों से अपने पाठ्यक्रम के विषय में चर्चा करते हैं किन्तु उच्च शिक्षा के विषय में अधिक ज्ञान न होने के कारण अभिभावक से उन्हें किसी प्रकार का मार्गदर्शन नहीं मिल पाता है। तथ्यों से ज्ञात होता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने ग्रेड और अंकों के बारे में अपने अभिभावकों से बहुत कम चर्चा करते हैं। अध्ययन से यह भी पता चलता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी कुछ हद तक ही अपने अभिभावकों से नौकरी से सम्बन्धित किसी प्रकार की चर्चा करते हैं। बहुत ही कम प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने अभिभावकों से विश्वविद्यालय परिसर में होने वाली समस्याओं के विषय में वार्तालाप करते हैं। इस आधार पर देखने से ज्ञात होता है कि कुल मिलाकर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने अभिभावकों से विश्वविद्यालय से जुड़े अनेक विषयों पर चर्चा तो अवश्य करते हैं किन्तु विद्यार्थियों की चुनौतियों को दूर करने एवं उनका समाधान करने में अभिभावक स्वयं को असर्मथ महसूस करते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा में उनके अभिभावकों की भागीदारी बहुत कम या नाम मात्र की होती है। इस आधार पर प्रस्तुत अध्ययन की चौथी परिकल्पना लगभग सत्य साबित होती है। अधिकांश अभिभावक प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए प्रेरणास्त्रोत का कार्य करते हैं किन्तु वास्तविक रूप से उनकी समस्याओं को दूर करने में असमर्थ होते हैं।

परिकल्पना 5: प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्रणाली में अलगाव महसूस करते हैं।

अध्ययन के परिणाम यह बताते हैं कि लगभग 48.5 प्रतिशत प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने सहपाठियों से बहुत कम या कुछ हद तक सहायता मांग पाते हैं। इसके अलावा 51.5 प्रतिशत विद्यार्थी सहयोग तो मांगते हैं किन्तु इनमें से अधिकांश को गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों द्वारा अपमानित किया जाता है।

प्रस्तुत अध्ययन के तथ्यों से यह भी प्रदर्शित होता है कि लगभग 98.2 प्रतिशत प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी इस बात को मानते हैं कि उनका पहनावा, बात करने का तरीका, खाने की आदतें गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों से अलग होती हैं। कुछ अपने आपको थोड़ा अलग मानते हैं तो अधिकतर अपने आपको बिल्कुल अलग मानते हैं। इसमें भी महिला प्रथम पीढ़ी की विद्यार्थी स्वयं को अलग मानती हैं। यह एक प्रकार का उच्च शिक्षा में अलगाव दर्शाता है।

यह अध्ययन यह भी बताता है कि 57.5 प्रतिशत प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी कुछ हद तक या पूरी तरह से पार्क, कैंटीन आदि स्थानों पर अलगाव महसूस करते हैं। इतना ही नहीं प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों जैसी अंग्रेजी फिल्मों, रेस्तरां, कंप्यूटरों, एवं खाद्य पदार्थों के विषय में जानकारी नहीं होती है। इस बात की भी पुष्टि होती है कि अधिकतर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय जैसा परिसर पहले कभी देखा।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में यह समझने का अभाव होता कि विश्वविद्यालय का जीवन कैसा होता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी में संकोची प्रवृत्ति होती है जिससे वे स्वयं को अकेला अनुभव करते हैं। इस अलगाव ने उन्हें उदासी और घबराहट के अनुभव से परिचित कराया, जिससे उनमें हल्के अवसाद और चिंताएँ पैदा हो गयी।

इस आधार पर हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत शोध अध्ययन की अन्तिम परिकल्पना भी पूर्ण रूप से सत्य साबित होती है।

समापन टिप्पणी एवं सुझाव

यह अध्ययन हमें उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों और प्रतिक्रिया के बारे में बताता है। इस अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सुझाव दिये जा सकते हैं:

1. यह अध्ययन एक महत्वपूर्ण तथ्य सामने लाता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी एक ऐसा समूह है जिन्हें उच्च शिक्षा में सफल होने के लिए अतिरिक्त सहायता और

संसाधनों की आवश्यकता होती है। जो विश्वविद्यालय के द्वारा प्रदान की जानी चाहिए।

2. उच्च शिक्षा में मध्यम एवं उच्च वर्ग की संस्कृति का प्रभुत्व होता है। शिक्षकों और प्रशासन का दबाव रहता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी उच्च शिक्षण संस्थानों की संस्कृति के मानदण्डों को आत्मसात करें जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए। शिक्षकों और प्रशासन को प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की समस्याओं के प्रति संवेदनशील होना चाहिए और परिसर में आरामदायक स्थिति में रखने के लिए मदद करनी चाहिए। इससे उनकी शैक्षिक सफलता पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा है।
3. यदि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी को उच्च शिक्षा में सफल बनाना है, तो शिक्षकों और प्रशासन को यह समझना होगा कि उनका जीवन गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों जैसा नहीं होता है। गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी कभी गरीबी में नहीं जीते और उन्हें जो सांस्कृतिक पूंजी विरासत में मिलती है, उससे उन्हें उच्च शिक्षा में शामिल होने में मदद मिलती है। वे शिक्षा, खेल और पाठ्योत्तर गतिविधियों पर अपनी ऊर्जा केन्द्रित करते हैं। शिक्षक और प्रशासन को प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को भी खेल एवं पाठ्योत्तर गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
4. प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी गैर–प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की तुलना में घर पर बहुत अधिक जिम्मेदारियाँ साझा करते हैं। यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि उन्हें उन जिम्मेदारियों से मुक्त नहीं किया जा सकता है। इसे ध्यान में रखते हुए उन्हें उच्च शिक्षा की मुख्यधारा में समायोजित करने के लिए नीतियाँ अपनानी चाहिए।
5. हालाँकि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में कुछ समानताएँ हैं, लेकिन यह सत्य है कि वे विभिन्न पृष्ठभूमि से आते हैं इसलिए वे एक सजातीय समूह नहीं हैं। उनकी सामान्य आवश्यकताओं के साथ–साथ विशिष्ट आवश्यकताओं को भी संबोधित किया जाना चाहिए।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करने में अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करते हैं। इन चुनौतियों का सामना करने के उपरान्त जो उन्हें सफलता प्राप्त होती है वह उनके भाई–बहनों, अपने परिवार में अन्य सदस्यों के

समक्ष प्रेरणास्त्रोत के रूप में उभरकर सामने आते हैं। इसलिए विश्वविद्यालय को प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए।